आज़ादी का अमृत महोत्सव

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

श्रुति

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम – 695001

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान : निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज़से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे । हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा जय हिंद !

श्रुति

हिंदी गृह पत्रिका

(31वां अंक)

(01 अप्रैल, 2022 से 30 सितंबर, 2022 तक)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695001

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
श्रीमती जी सुधर्मिनी
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक
श्री एन दिनकरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदात्री समिति

श्री बिजू जोसफ
वरिष्ठ उप महालेखाकार

श्रीमती वल्सम्मा तोमस
वरिष्ठ उप महालेखाकार

संपादक मंडल

श्रीमती लोला आर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्रीमती के आर रोहिणी
हिंदी अधिकारी, संपादक

संपादन सहयोग

श्रीमती एस संध्या
हिंदी अधिकारी

श्रीमती गेलीकृष्णा सी जी
हिंदी अधिकारी

श्रीमती निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार
1.	हिंदी दिवस, 2022 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	
2.	संरक्षक की कलम से.....	
3.	मुख्य संपादक की कलम से.....	
4.	संपादक मंडल की ओर से	
5.	संत कवि कबीर दास	यामिनी मेनोन, सहायक लेखा अधिकारी
6.	एक हसीन एक्सिडेंट	वीरेंद्र कुमार, लेखाकार
7.	कहाँ गई रावण की लंका	कविता सुरेश, सहायक पर्यवेक्षक
8.	हिंदी पखवाड़ा समारोह-2022	
	हिंदी पखवाड़ा समारोह-2022 के दौरान आयोजित कविता रचना प्रतियोगिता में “सफर” शीर्षक पर विभिन्न प्रतिभागियों की रचनाएँ	
9.	जीवन की यात्रा	राजी राजन, सहायक लेखा अधिकारी
9.	सफर	शांति के, सहायक लेखा अधिकारी
10.	सफर	सिंधु सी सी, सहायक लेखा अधिकारी
11.	सफर	एम टी विजयन, सहायक लेखा अधिकारी
12.	सबक - कहानी	सुमित कुमार, लेखाकार
13.	तिरुवंतपुरम के दर्शनीय स्थान	
14.	01.04.2022 से 30.09.2022 तक की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों/ कर्मचारियों की सूची	
15.	हिंदी पखवाड़ा समारोह-2022 के दौरान आयोजित पोस्टर डिज़ाइनिंग प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए पोस्टर	
16	चित्र	सतिथा, लेखाकार

हिन्दी ने विश्वभर में भारत को एक विशिष्ट सम्मान दिलाया है। इसकी सरलता, सहजता और संवेदनशीलता हमेशा आकर्षित करती है। हिन्दी दिवस पर मैं उन सभी लोगों का हृदय से अभिनंदन करता हूं, जिन्होंने इसे समृद्ध और सशक्त बनाने में अपना अथक योगदान दिया है।

सत्यमेव जयते

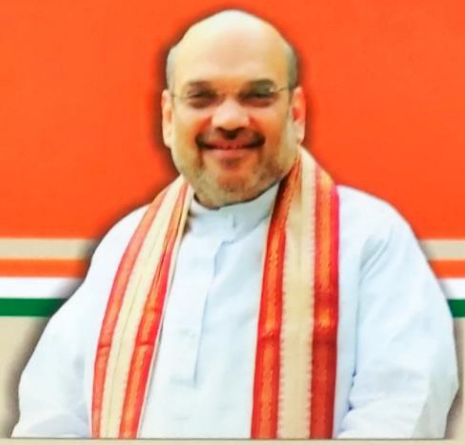

हिंदी दिवस 2022

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

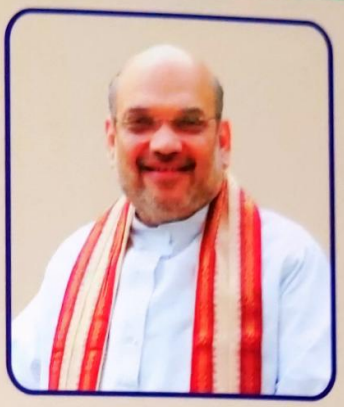

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

75

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जी सुधर्मिनी
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), केरल

संरक्षक की कलम से .....

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका"श्रुति" का 31वाँ अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हमारे कार्यालय में हिंदी का प्रचार प्रसार करने में "श्रुति" पत्रिका का योगदान सराहनीय रहा है। इस पत्रिका ने राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों को रचनात्मक मंच प्रदान करने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के निरंतर विकास एवं प्रचार-प्रसार करने की दिशा में योगदान प्रदान करती रहेगी।

"श्रुति" पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आप सबके सतत सहयोग से यह पत्रिका और भी रोचक एवं समृद्ध बनेगी।

हार्दिक शुभकामनाएँ !

सुधर्मिनीजी

(जी सुधर्मिनी)
प्रधान महालेखाकार

एन दिनकरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

मुख्य संपादक की कलम से .....

यह अत्यंत गर्व एवं हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका "श्रुति" के इकत्तीसवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के उत्तरोत्तर विकास एवं राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति दृढ़ निश्चय एवं रुचि दर्शाती है।

हिंदी एक सरल एवं सहज भाषा है । यह हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर पर समन्वय एवं संपर्क भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित है । अतः कार्यालय के सभी कार्मिकों को हिंदी पढ़ने, बोलने तथा लिखने में प्रतिष्ठा व सम्मान की अनुभूति होनी चाहिए तथा अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों के निष्पादन में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।

पत्रिका के इस अंक को सफल बनाने में सहयोग करनेवाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक आप सभी को पसंद आएगा तथा इसे पढने के पश्चात् अपनी प्रतिक्रियाओं से हमारा उत्साह बढाएंगे तथा मार्गदर्शन करेंगे।

एन दिनकरन

(एन दिनकरन)
वरिष्ठ उप महालेखाकार

संपादक मंडल की ओर से.....

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहिका, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है।

कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका "श्रुति" के 31वें अंक का प्रकाशन अत्यंत ही हर्षित करनेवाली है। कार्यालयों द्वारा प्रकाशित की जानेवाली हिंदी गृह पत्रिकाएँ कार्मिकों के रचनात्मक प्रतिभा को उभारने तथा उनमें राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हिंदी गृह पत्रिका " श्रुति " के 31वें अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक धन्यवाद। इसके साथ ही आप सभी पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंक को और अधिक रुचिकर, आकर्षक बनाने एवं सुधार हेतु अपने मूल्यवान सुझाव अवश्य साझा करें।

धन्यवाद !

संपादक मंडल

संतकवि कबीरदास

यामिनी मेनोन
सहायक लेखा अधिकारी

कबीरदास जी हिंदी साहित्य के, विशेषतः निर्गुण भक्ति शाखा के एक जाने-माने महान कवि होने के साथ-साथ अनन्यतम समाज सुधारक भी थे । उन्होंने समाज में प्रचलित अत्याचारों और कुरीतियों को खतम करने की बहुत कोशिश की जिसके लिए उन्हें समाज से बहिष्कृत भी होना पड़ा । किंतु वे अपने इरादों में अटल रहे और अपने अंतिम श्वास तक जगत कल्याण के लिए लड़-लड़कर जीते रहे ।

ऐसा माना जाता है कि सन् 1398 ईसवीं में उनका जन्म काशी के लहरतारा नामक क्षेत्र में हुआ था । वास्तव में उन्हें एक विधवा ब्राह्मणी ने जन्म दिया था और लोकलाज की डर से उन्होंने अपने बच्चे को एक तालाब के निकट छोड़ दिया । वहाँ से नीरू और नीमा नामक एक जुलाहे दंपति ने उन्हें गोद लिया और अपने पुत्र की तरह उनका पालन-पोषण किया ।

शुरू से ही जुलाहे परिवार के विश्वास को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी उन्हें मिल जाने पर भी उन्होंने अपनी शिक्षा स्वामी रामानंद जी से ली । वे बेहद ज्ञानी थे और इस कारण से तुरंत ही स्वामी रामानंद के अग्रगण्य शिष्य बन गए । स्कूली शिक्षा न प्राप्त करते हुए भी कबीरदास जी अवधि, ब्रज, हिंदी, भोजपुरी आदि भाषाओं का पंडित होने के साथ-साथ राजस्थानी, हरियाणवी, खड़ीबोली जैसी भाषाओं में भी महारथ निकले । उनकी रचनाओं में सभी भाषाओं की झांकी मिल जाती है और इसी वजह उनकी भाषा को **'सधुक्कड़ी'** या **'खिचड़ी'** कही जाती है ।

आम शिक्षा नहीं लेने के कारण कबीरदास जी ने स्वयं कुछ नहीं लिखा परंतु उनके शिष्यों ने उनके बोल संग्रहीत कर लिया । उनके एक शिष्य धर्मदास ने **बीजक** नामक ग्रंथ का निर्माण किया जिसके तीन भाग हैं- **'साखी',**

'सबद' और 'रमैनी' । इसके अलावा **'सुखनिधन', 'होली अगम'** जैसी उनकी रचनाएँ भी बेहद प्रचलित हैं।

कबीरदास जी एक महान समाज सुधारक थे । उन्होंने पूजा पाठ के नाम पर होने वाले पाखंड, समाज में प्रचलित कई तरह की कुरीतियों, जाति-पांति, मूर्ति पूजा, कर्मकांड आदि कई अन्य बुराईयों का खुलकर खंडन किया।

उन्होंने अपना सारा जीवन साधुवों तथा फकीरों के साथ समाज के उद्धार हेतु गुज़ार दिया । वे निराकार ब्रह्म के कडे उपासक थे । उनका यह मानना था कि सब जाति व धर्म एक है एवं हम सब के अंदर खुदा या भगवान का वास है जिसको समझे बिना हम (मानव) ईश्वर को बाहर सभी जगहों पर ढूँढ रहे हैं । उनका विश्वास था कि हम अपने अंतर्लीन भगवान को पहचान कर अपना विचार शुद्ध रखें और यही सबसे बड़ी भक्ति है।

समाज के अत्याचारों का पुरज़ोर खंडन करते रहने पर कई बार उन्हें समाज से निष्कासित किया गया पर उन्होंने कभी भी अपना मार्ग नहीं छोड़ा । उनका कहना था कि इस दुनिया में सत्य से बढ़कर कुछ नहीं होता और यही सबसे बड़ा तप है। उनका जन्म, जीवन एवं मृत्यु एक उत्कृष्ट उदाहरण है और उनकी महानता की तुलना शायद किसी से या कभी भी नहीं की जा सकती है।

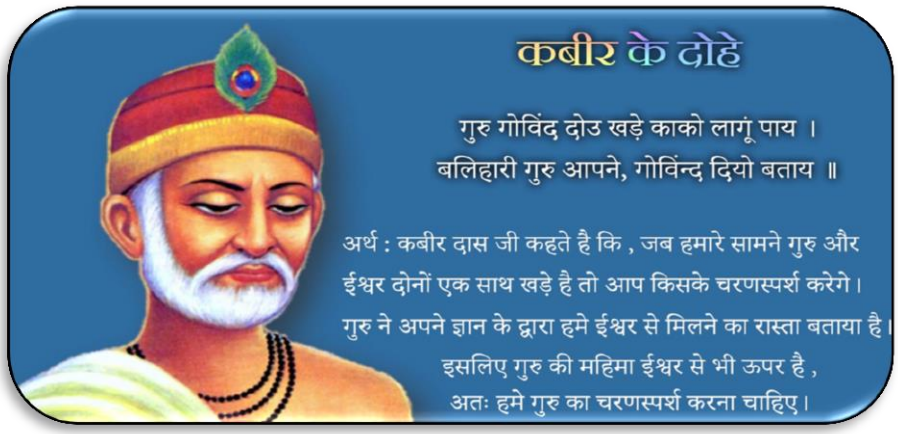

एक हसीन एक्सीडेंट

वीरेंद्र कुमार
लेखाकार

जवां एक इधर से चला जा रहा था

गाड़ी एक उधर से चली आ रही थी,

न थी कि गाड़ी वो चली आ रही थी

हकीकत में जन्नत खींची जा रही थी,

ओ झुक झुक के दामन उठाने का आलम

ओ रुक रुक गाड़ी चलाने का आलम,

ये सब देख जवां वो घबरा गया था

कि वो जाके गाड़ी से टकरा गया था,

नाज़नीन सिटपिटायी लो पुलिस आ गई

गिरफ्तार होने की बारी भी आ गई,

खून से लथपथ जवां हो पड़ा था

इधर एक मासूम कातिल खड़ा था,

लाश जब नौजवां की उठाई गई

खून से लिखी इबादत ये पाई गई,

कि जवानी के झोके में घबरा गया था

मैं खुद जाकर गाड़ी से टकरा गया था।

मैं खुद जाकर गाड़ी से टकरा गया था।

कहाँ गई रावण की लंका

कविता सुरेश
सहायक पर्यवेक्षक

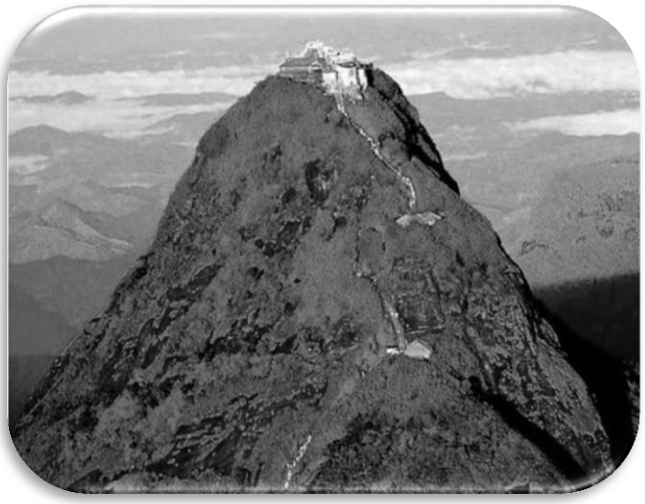

भारत में जन साधारण की यह कल्पना है कि श्रीलंका ही रावण की लंका है । गोस्वामी तुलसीदास ने 'मानस' में लंका को सिंहल कहा है।

दक्षिण समुद्र के तट पर त्रिकूट नामक पर्वत है। इसके शिखर पर एक विशाल पुरी है, जो देवराज इंद्र की अमरावती के समान शोभा पाती है, जिसका नाम लंका है। इंद्र की अमरावती के समान उस रमणीय पुरी का निर्माण विश्वकर्मा ने राक्षसों के रहने के लिए किया है।

श्रीलंका के दक्षिणी तट पर गल्ले के पास राम और सीता से जुड़ा हुआ एक स्थान और भी है जिसे रूमास्सला कंडा कहा जाता है। यहाँ एक पर्वत है, जिसका नाम रूमास्सला पर्वत है। इस पहाड़ पर चढ़कर गल्ले तट का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है। यदि आसमान साफ हो तो यहाँ से एडम्स पीक या श्रीपद भी देखा जा सकता है। इस पूरे स्थान पर यह पर्वत काफी अलग प्रतीत होता है। रामायण के अनुसार यह वही पर्वत है, जिसे लक्ष्मण को शक्ति लगने पर हनुमान उठा लाए थे। सीता का अपहरण कर लेने के बाद रावण ने उन्हें पहले रावण कोटे में ही रखा था। बाद में सुरक्षा की दृष्टि से एक छोटे-से पठार नुवारा एलिया में रखा। नुवारा एलिया में सीता को उसने अशोक वाटिका में रखा।

जब राम की सेना लंका में आ रही थी, तब रावण ने सीता को घने जंगलों में स्थित एक गुफा में रखा था।

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2022

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), केरल के कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 14.09.2022 को हिंदी दिवस का पालन किया गया और 14.09.2022 से 29.09.2022 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अधिकारियो/कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। दिनांक 23.09.2022 को अधिकारियों के लिए "राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम" का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाडा समारोह-2022 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची

प्रतियोगिता	स्थान	नाम एवं पदनाम
निबंध लेखन (हिंदी भाषा-भाषी कार्मिकों के लिए)	प्रथम	सुमित कुमार, लेखाकार
	द्वितीय	शशि कुमार, लेखापरीक्षक
	तृतीय	ज्योति, लेखापरीक्षक
निबंध लेखन (हिंदीतर भाषा-भाषी कार्मिकों के लिए)		प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम
	प्रथम	शांति के, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	संजा सी चंद्रन, लेखापरीक्षक
	तृतीय	मेलविन षाजी, लेखापरीक्षक
		शाखा कार्यालय, तृश्शूर एवं कोषिकोड़
	प्रथम	एम टी विजयन, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	विनोदिनी कुमारन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	तृतीय	सिंधु यू पी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

	शाखा कार्यालय, कोट्टयम	
	प्रथम	डेयिसम्मा राजू, सहायक पर्यवेक्षक
	द्वितीय	जेइन एस, लेखाकार
	तृतीय	मिनी पवित्रन, सहायक पर्यवेक्षक
टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता	प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम	
	प्रथम	अविनाश नाथ, लेखापरीक्षक
	द्वितीय	रश्मि आर नायर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	तृतीय	मिनी सैमुअल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	शाखा कार्यालय, तृश्शूर एवं कोषिकोड़	
	प्रथम	सिंधु यू पी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	द्वितीय	विनोदिनी कुमारन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	तृतीय	एम टी विजयन, सहायक लेखा अधिकारी
	शाखा कार्यालय, एरणाकुलम	
	प्रथम	विद्या मोहनलाल, वरिष्ठ लेखाकार
	द्वितीय	आन्ड्रिया लुइस, वरिष्ठ लेखाकार
	तृतीय	शोभना कुमारी, वरिष्ठ लेखाकार
	शाखा कार्यालय, कोट्टयम	
	प्रथम	सिंधु सी सी, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	जेइन एस, लेखाकार
	तृतीय	तंकच्चन टी, वरिष्ठ लेखाकार
कथा रचना प्रतियोगिता (हिंदी भाषा-भाषी कार्मिकों के लिए)	प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम	
	प्रथम	अनुराग शुक्ला, लेखापरीक्षक
	द्वितीय	सुमित कुमार, लेखाकार
	प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम	
कथा रचना प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषा-भाषी कार्मिकों के लिए)	प्रथम	रितिन कुमार के के, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	द्वितीय	केवल कुमार मकवाना, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
	तृतीय	उषा बेर्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
	शाखा कार्यालय	
	प्रथम	विनोदिनी कुमारन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
	द्वितीय	अशोक कुमार एम आर, सहायक लेखा अधिकारी

	प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम	
कविता रचना प्रतियोगिता (हिंदी भाषा-भाषी कार्मिकों के लिए)	प्रथम	अनुराग शुक्ला, लेखापरीक्षक
	द्वितीय	वीरेश सिंह, लेखापरीक्षक
	तृतीय	अंकित सिंह, लेखापरीक्षक
कविता रचना प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषा-भाषी कार्मिकों के लिए)	प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम	
	प्रथम	राजी राजन, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	शांति के, सहायक लेखा अधिकारी
	तृतीय	उषा बेर्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
	शाखा कार्यालय	
	प्रथम	सिंधु सी सी, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	एम टी विजयन, सहायक लेखा अधिकारी
	तृतीय	तंकच्चन टी, वरिष्ठ लेखाकार
	प्रोत्साहन	षाजी पी वी, लेखापरीक्षक
सुलेखन प्रतियोगिता	प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम	
	प्रथम	नलिनी मेनोन, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	ज्योति, लेखापरीक्षक
	तृतीय	सुमित कुमार, लेखाकार
	शाखा कार्यालय, तृश्शूर	
	प्रथम	सुबिना एम, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
	द्वितीय	मंजु सी, लेखापरीक्षक
	तृतीय	श्रीलता के आर, सहायक लेखा अधिकारी
	शाखा कार्यालय, कोषिकोड़	
	प्रथम	एन एम मोहनन, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	शंकरनारायणन टी पी, सहायक लेखा अधिकारी
	तृतीय	प्रभाकरन ई, सहायक लेखा अधिकारी
	शाखा कार्यालय, एरणाकुलम	
	प्रथम	आन्ड्रिया लुइस, वरिष्ठ लेखाकार
	द्वितीय	श्रीजित के आर, वरिष्ठ लेखाकार
	तृतीय	शोभना कुमारी, वरिष्ठ लेखाकार

	शाखा कार्यालय, कोट्टयम	
	प्रथम	सिंधु सी सी, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	अशोक कुमार एम आर, सहायक लेखा अधिकारी
	तृतीय	डेयिसम्मा राजु, सहायक पर्यवेक्षक
पोस्टर डिज़ाइनिंग प्रतियोगिता	प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम	
	प्रथम	अविनाश नाथ, लेखापरीक्षक
	द्वितीय	वीरेश सिंह, लेखापरीक्षक
	तृतीय	साई कुमार जे ए, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
	शाखा कार्यालय, तृश्शूर	
	प्रथम	सुदर्श के एस, बहुकार्य कर्मी
	द्वितीय	नीनू एम डी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
	तृतीय	दीपक के वी, सहायक पर्यवेक्षक
	शाखा कार्यालय, एरणाकुलम	
	प्रथम	विद्या मोहनलाल, वरिष्ठ लेखाकार
	द्वितीय	आन्ड्रिया लुइस, वरिष्ठ लेखाकार
	तृतीय	श्रीजित के आर, वरिष्ठ लेखाकार
	शाखा कार्यालय, कोट्टयम	
	प्रथम	जिनु अब्रहाम, वरिष्ठ लेखाकार
	द्वितीय	तंकच्चन टी, वरिष्ठ लेखाकार
	तृतीय	मिनी पवित्रन, सहायक पर्यवेक्षक
	शाखा कार्यालय, कोषिकोड़	
	प्रोत्साहन	मोहम्मद सहीर

हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित कविता रचना प्रतियोगिता में विभिन्न प्रतिभागियों की रचनाएँ

जीवन की यात्रा

राजी राजन
सहायक लेखा अधिकारी

जैसे मैं भीड-भाड वाली ट्रेन में सैंडविच की तरह खड़ा था
पसीने के साथ मिले सस्ते और महंगे परफ्यूम की महक,
बहती हवा के बीच से बह गया और इसने मुझे याद दिलाया
कॉकटेल जूस में से, विभिन्न स्वादों का मिश्रण।
दरवाज़े पर बिछे बहुरंगी कालीन के ऊपर
मुझे एक प्रवेश मिली जो एक खुली खिड़की की तरह थी,
एक कैनवस जहाँ पेंटिंग बदलती रहती थी
थिएटर स्क्रीन पर चलती तस्वीरों की तरह।
गहरे नीले आकाश में कपास के गोले जैसे बादलों के साथ
पक्षियों के झुंड तेज़ी से उड़ रहे थे, मानो
स्वर्ग के द्वार पर पहुंच गए हों,
उनके पीछे दौडते हुए आए, पेड़ और फूल वाले खेत
लेकिन वे सभी किसी दूर देश की ओर भागते हुए प्रतीत होते थे।
एक सीटी की आवाज़ पर वे सब रुक गए
अगली सीटी पर चलती रही जिसने चुप्पी तोड़ दी,

न जाने तब ये असल ज़िंदगी की रिहर्सल थी

क्योंकि जीवन में संकट कहीं से भी आ सकता है

और कोई रुक सकता है और सोच सकता है कि यही अंत है।

लेकिन इस दुनिया में सुख की तरह दुःख भी अस्थिर है,

और ईश्वर का शक्तिशाली हाथ थामे हम चलते रहते हैं,

लेकिन अपने गंतव्य पर पहुंचने पर हमें ट्रेन छोडनी पड़ती है,

कुछ मुस्कानों और रिश्तों की यादों के साथ

जो कुछ देर के लिए रह जाते हैं।

इसी तरह जब हमारे जीवन की यात्रा समाप्त हो जाती है

हमें याद किए जाएंगे केवल अपने निस्वार्थ कर्मों

और अच्छे संबंधों के लिए ही।

सफर

शांति के
सहायक लेखा अधिकारी

जिंदगी है एक सफर
गम और खुशी का
सफर है यह छोटा
बस में नहीं अपने।

जीवन का यह सफर
जी लो पूरे जोश से
लौटता नहीं कोई पल
हँसते हँसते काट लो

सफर है गाड़ी जैसा
चढना-उतरना बीच-बीच में
जारी रहता है मगर
पूरा हमें करना भी है

पीछे मुडकर न देख
आगे की मत सोच
खुलके जियो यह पल
मुस्कान और उत्साह से

धन्य बना ले जीवन
किसी का परोपकार से
इस जीवन वाले सफर
को खुद बनाओ धन्य

जीवन का सफर है सुहाना
खूबसूरत और आनंदमय
विधाता ने दिया है मौका
हर पल का कर लो एहसास

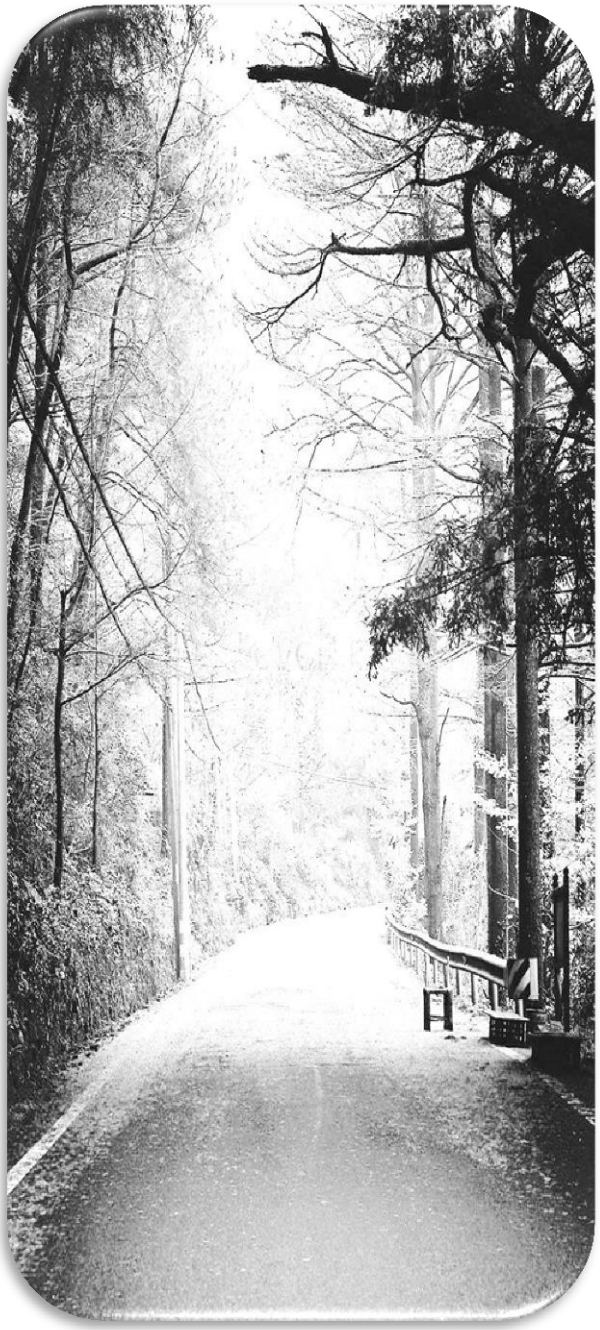

सफर

सिंधु सी सी
सहायक लेखा अधिकारी

सफर ज़िंदगी का यह सफर,

अजीब दास्तान है यह सफर

किसी को न पता कहाँ से यह शुरू

न कोई जानता, है कहाँ यह खतम।

मंजिलें बहुत है सबकी पर,

मंजिल नहीं मिलती सभी को।

अजीब सा सफर है यह ज़िंदगी,

कि बहुत कुछ सिखाया हमको

बिना कोई कक्षा न किताबों के।

जिंदगी के इस सफर में आते है कई मोड़,

पर कोई न समझता, कहाँ रुकना है।

कभी न सोचा, यह सफर इतना कठिन होगा,

पर खुदा की कृपा से पार कर सका।

शुक्र गुज़ार हैं हम अपने हमसफर के कि

इनके बिना रह जाता यह सफर अधूरा।

जिंदगी के सफर में वक्त चलता ही रहता है

खुदा से यही है दुआ कि

हाथ धामे मेरा साथ निभाना, इस सफर में

क्योंकि अभी निभानी है मुझे भूमिकाएँ कई।

सफर

एम टी विजयन
सहायक लेखा अधिकारी

जीवन एक लंबा सफर है।
कभी पैदल चलना है, कभी गाड़ी में
कभी दौडना है, कभी समंदर में,
कभी आसमान में चिडिया जैसे उड़ना है।

जीवन का सफर जारी है,
आँखों की रोशनी कम होने तक।
कभी जंगली स्थान से, कभी रेगिस्तान से
जीवन का सफर जारी है।

कभी धूप में, कभी बारिश में
कभी बर्फीली रास्ते से,
शुरू में माँ के सुकोमल हाथ पकड़कर
फिर छतरी का सहारा लेकर,
और अंत में, बिना दाँतों के
दुर्बल पैर से छड़ी पकड़कर.....
जीवन का यह सफर परिसमाप्त होता है .....

तो भी, जीवन का यह लंबा
और सुहाना सफर जारी रखना है,
नये उत्साह से, नये उमंग से,
नयी प्रत्याशा से .....

सबक

सुमित कुमार
लेखाकार

'राहुल' एक गरीब घर से था। उसके पिताजी (श्याम) एक साधारण शिक्षक थे और माताजी गृहिणी थी। उसने हाल ही में इंटरमीडिएट की परीक्षा काफी अच्छे अंकों में पास की थी। अब उसे आगे की पढ़ाई के लिए मार्ग दर्शन की आवश्यकता थी। लेकिन उसने समय को ध्यान में न रखा और देखते-ही-देखते एक साल गुज़ार भी गया। उसे अभी भी न सूझ रहा था कि क्या करें। उसने यह परेशानी अपने पिताजी को बताई। कुछ दिन बाद 'अमित' जो राहुल के पिताजी के बचपन के दोस्त थे, पेशे से एक सरकारी अधिकारी थे, छुट्टियों में घर आए थे। श्याम, राहुल को अपने मित्र के पास लेकर गया। राहुल ने अमित को नमस्ते किया। राहुल के भविष्य के बारे में उन्होंने बताया कि "सिविल सेवा में अच्छा अवसर है। बहुत ही प्रतिष्ठित सेवा है देश की। इसकी तैयारी के लिए दिल्ली जाना पड़ेगा"। कुछ देर बाद श्याम ने अमित से विदा ली।

चूँकि श्याम की आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी कि वह बेटे को दिल्ली भेजकर पढ़ा सके। देखते-ही-देखते एक साल और गुज़र गया।

काफ़ी सोच-विचार करने के बाद उन्होंने राहुल को दिल्ली भेज दिया। अब राहुल ने दिल्ली में कुछ नए मित्रों की मदद से मुखर्जी नगर में कमरा ले लिया। कोचिंग में मोटी रकम देकर नामांकन भी करा लिया। अब राहुल धीरे-धीरे दिल्ली के माहौल में ढलने लगा। उसके मित्र कमरे पर दारू पीते थे। अकसर पार्टी किया करते थे और राहुल भी उसमें शामिल हो जाता था। दिल्ली में राहुल का एक साल गुज़र गया था। वह भूल गया था कि उसके माता-पिता पैसों की व्यवस्था कितनी मुश्किल से करते हैं।

आखिरकार, फार्म भरने का समय आया। राहुल ने फार्म भर दिया। दो महीने के बाद परीक्षा हुई और अगले दो महीनों के बाद परिणाम भी आ गया। उसने घरवालों को फोन करके बताया कि उसका रिसल्ट नहीं हुआ है। उसके माता-पिता के आँसू रुक ही नहीं रहे थे, परिणाम सुनने के बाद।

अब घर में पैसों को लेकर काफी तंगी आ गयी थी। श्याम को लोगों से कर्ज मांगकर राहुल को पैसे भेजने पड़ते थे। राहुल की माताजी को दूसरे के घरों में जाकर काम करना पड़ता था। अब राहुल को चीज़ें समझ में आ रही थी कि उसने कितना वक्त व्यर्थ गुज़ार दिया है। अब उसने पूरे लगन से मेहनत करना शुरू कर दिया। फिर से फार्म भरने का समय आया। इस बार उसने पढ़ाई में पूरी जान लगा दी। परीक्षा समाप्त हो गया। दो महीने बाद परिणाम आए। फिर से वह असफल रहा।

अब राहुल पूरी तरह टूट गया था। उसे समझ में नहीं आ रहा था घर वापस चला जाए या फिर यहीं दिल्ली में रहे। फिर उसने घर में फोन किया और अपने पापाजी से बात की। श्याम ने समझाते हुए कहा - "बेटा हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। हम पैसों की जैसे-तैसे करके व्यवस्था कर रहे हैं, तुम पूरी लगन से पढ़ाई करो।"

फिर से राहुल ने फार्म भर दिया था। कुछ महीनों बाद, परीक्षा के परिणाम आए। उसके मित्र उसे फोन कर रहे थे परिणाम जानने के लिए, लेकिन उसका फोन बंद आ रहा था। वे लोग उसके कमरे पर गए तो कमरा खाली पड़ा था। पूछने पर पता चला कि वह कमरा छोड़कर चला गया है। उसके मित्रों ने बहुत ढूँढ़ा, लेकिन उसका पता न लगा। उनको डर लगने लगा कि कहीं राहुल ने आत्महत्या तो नहीं कर ली।

काफी समय गुज़र गए। राहुल के मित्र मुखर्जी नगर के रास्ते से गुज़र रहे थे कि उसकी नज़र अचानक एक कोचिंग संस्थान की बोर्ड पर पड़ी। देखते ही मानो उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गया हो। उसने तुरंत काँपते हाथों से फोन निकाला ओर बाकी मित्रों को बुलाया। वे लोग आए तो देखा कि राहुल अब आईपीएस बन गया था, उसका अखिल भारतीय रैंक 73 था। उनकी आखों से आँसू निकल रहे थे। जिस कोचिंग संस्थान पर बोर्ड लगी थी, वे लोग उसके अंदर गए। वहीं राहुल बैठा हुआ था। उसकी नज़र उनके मित्रों पर पड़ी। वह दौड़कर उनसे लिपट गया। उसने अपनी सारी आप-बीती मित्रों को बतायी। वो अपने घर पे पहले ही बता चुका थे। सभी मित्र काफी खुश थे।

राहुल ने अपनी ज़िदगी में एक बड़ी **"सबक"** सीखी कि अपना मूल्यवान समय कभी व्यर्थ व्यतीत नहीं करना चाहिए।

तिरुवनंतपुरम के दर्शनीय स्थान

श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर : अनंतशायी श्री पद्मनाभस्वामी की नगरी है श्री (तिरु) अनंतपुरम अथवा तिरुवनंतपुरम । तिरुवनंतपुरम में स्थित **श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर** भारत के सबसे प्रमुख मंदिरों में से एक है तथा तिरुवनंतपुरम का ऐतिहासिक स्थान है। पूर्वी दुर्ग के अंदर स्थित इस मंदिर का परिसर बहुत विशाल है जिसकी अनुभूति इसका सात मंजिला गोपुरम देखकर हो जाता है। केरल और द्रविड़ियन वास्तुशिल्प कला में निर्मित यह मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। पद्मा तीर्थम, पवित्र कुंड, कुलशेखर मंडप और नवरात्रि मंडप इस मंदिर को और भी आकर्षक बनाते हैं। 260 वर्ष पुराने इस मंदिर में केवल हिंदु धर्म में विश्वास रखने वाले ही प्रवेश कर सकते हैं। पुरुष केवल श्वेत धोती पहन कर यहां आ सकते हैं। इस मंदिर का नियंत्रण तिरुवितांकूर (त्रावनकोर) राजसी परिवार द्वारा किया जाता है। इस मंदिर में दो वार्षिक उत्सव मनाए जाते हैं - एक पैंकुनी के महीने (15 मार्च-14 अप्रैल) में और दूसरा अल्पशी के महीने (अक्टूबर-नवंबर) में। इन समारोहों में हजारों की संख्या में श्रद्धालु भाग लेते हैं।

तिरुवनंतपुरम वेधशाला : यह वेधशाला तिरुवनंतपुरम के संग्रहालय परिसर में स्थित है। महाराज स्वाति तिरुनाल ने 1837 में इसका निर्माण करवाया था। यह भारत की सबसे पुरानी वेधशालाओं में से एक है। यहां आप अंतरिक्ष से संबंधित सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पहाड़ी के सामने एक अति सुंदर उद्यान है जहां गुलाब के फूलों का संग्रह है। वर्तमान में इसका पर्यवेक्षण भौतिकी विभाग, केरल विश्वविद्यालय द्वारा किया जा रहा है।

चिड़ियाघर : यह चिड़ियाघर भारत का दूसरा सबसे पुराना चिड़ियाघर है। 55 एकड़ में फैला यह जैविक उद्यान वनस्पति उद्यान का भाग है। इसका निर्माण 1857 ईसवीं में तिरुवितांकूर (त्रावनकोर) के महाराजा द्वारा बनाए गए संग्रहालय के एक भाग के रूप में हुआ था। यहां देशी-विदेशी वनस्पति और जंतुओं का संग्रह है। यहां आने पर ऐसा लगता है

जैसे कि नगर के बीचों बीच एक वन बसा हो। रेप्टाइल हाउस में सांपों की अनेक प्रजातियां रखी गई हैं। इस चिड़िया घर में नीलगिरी लंगूर, भारतीय गैंडा, एशियाई सिंह और राजसी बंगाल व्याघ्र भी आपको दिख जाएगें। समय: सुबह 10 से शाम 5 बजे तक, सोमवार को बंद रहता है।

विषिञ्जम : तिरुवनंतपुरम से 17 किलोमीटर दूर स्थित विषिञ्जम मछुआरों का गांव है जो आयुर्वेदिक चिकित्सा और बीच रिजॉर्ट के लिए प्रसिद्ध है। विषिञ्जम का एक अन्य आकर्षण चट्टान को काट कर बनाई गई गुफा है जहां वीणाधारा दक्षिणमूर्ति का एक मंदिर है। इस मंदिर में 18वीं शताब्दी में चट्टानों को काटकर बनाई गई प्रतिमाएं रखी गई हैं। मंदिर के बाहर भगवान शिव और देवी पार्वती की अर्धनिर्मित प्रतिमा स्थापित है। विषिञ्जम में पत्तन का निर्माण प्रगति पर है।

विषिञ्जम में मैरीन एक्वैरियम भी है जहां रंग-बिरंगी और आकर्षक मछलियां जैसे क्लाउन फिश, स्क्विरिल फिश, लायन फिश, बटरफ्लाइ फिश, ट्रिगर फिश आदि रखी गई हैं। इसके अलावा यहां सर्जिअन फिश और शार्क जैसी शिकारी मछलियां भी देख सकते हैं।

कनकक्कुन्नु महल : नेपिअर संग्रहालय से 800 मीटर उत्तर पूर्व में स्थित यह महल केरल सरकार से संबंद्ध है। एक छोटी-सी पहाड़ी पर बने इस महल का निर्माण श्री मूलम तिरुनल महाराज के शासन काल में हुआ था। इस महल की आंतरिक सजावट के लिए खूबसूरत दीपदानों और शाही फर्नीचर का प्रयोग किया गया है। यहां स्थित निशागंधी ओपन एयर ओडिटोरिअम और सूर्यकांति ओडिटोरिअम में अनेक सांस्कृतिक सम्मेलनों और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। पर्यटन विभाग निशागंधी ओपन एयर ओडिटोरिअम में प्रतिवर्ष अखिल भारतीय नृत्योत्सव का आयोजन करता है। इस दौरान जाने-माने कलाकार भारतीय शास्त्रीय नृत्य-संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं।

नेपियर संग्रहालय : लकड़ी से बनी यह आकर्षक इमारत शहर के उत्तर में म्यूजियम रोड पर स्थित है। यह भारत के सबसे पुराने संग्रहालयों में से एक है। इसका निर्माण 1855 में हुआ था। मद्रास के गवर्नर लॉर्ड चार्ल्स नेपियर के नाम पर इस संग्रहालय का नाम रखा गया है। यहां शिल्प शास्त्र के अनुसार 8वीं-18वीं शताब्दी के दौरान कांसे से बनाई गई शिव, विष्णु, पार्वती और लक्ष्मी की प्रतिमाएं भी प्रदर्शित की गई हैं।

चाचा नेहरु बाल संग्रहालय : यह बच्चों के आकर्षण का केंद्र है। इसकी स्थापना 1980 में की गई थी। यह सिटी सेंट्रल बस स्टेशन से 1 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। इस संग्रहालय में विभिन्न परिधानों में सजी 2000 आकृतियां रखी गई हैं। यहां हेल्थ एजुकेशन डिस्प्ले, एक छोटा एक्वेरिअम और मलयालम में प्रकाशित पहले बाल साहित्य की प्रति भी प्रदर्शित की गई है।

शंखुमुखम बीच : यह बीच शहर से लगभग 8 किलोमीटर दूर है। इसके पास ही तिरुवनंतपुरम हवाई अड्डा स्थित है। इंडोर मनोरंजन क्लब, चाचा नेहरु ट्रैफिक ट्रैनिंग पार्क, मत्स्य कन्या और स्टार फिश के आकार का रेस्टोरेंट यहां के मुख्य आकर्षण हैं। नाव चलाते सैकड़ों मछुवारे और सूर्यास्त का नजारा यहां बहुत ही सुंदर दिखाई देता है। मंदिरों में होने वाले उत्सवों के समय इस समुद्री तट पर भगवान की प्रतिमाओं को पवित्र स्नान कराया जाता है।

कोवलम बीच: तिरुवनंतपुरम शहर से 16 किलोमीटर दूर स्थित कोवलम बीच केरल का एक प्रमुख पर्यटक केंद्र है। रेतीले तटों पर नारियल के पेड़ों और खूबसूरत लैगून से सजा यह बीच पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। कोवलम बीच के पास तीन और तट भी हैं जिनमें से दक्षिणतम छोर पर स्थित लाइट हाउस बीच सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यह विश्व के सबसे अच्छे तटों में से एक है। कोवलम के तटों पर अनेक रेस्टोरेंट हैं, जिनमें सी फूड मिलते हैं।

आट्टुकाल देवी का मंदिर: आट्टुकाल पोंगाला महिलाओं द्वारा मनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध उत्सव है । यह उत्सव तिरुवनंतपुरम से 2 किलोमीटर दूर देवी के प्राचीन मंदिर में मनाया जाता है । 10 दिनों तक चलने वाले पोंगाला उत्सव की शुरुआत मलयालम माह मकरम-कुंभम (फरवरी-मार्च) के भरणी दिवस (कार्तिक चंद्र) को होती है। पोंगल एक प्रकार का व्यंजन है जिसे गुड़, नारियल और केले की निश्चित मात्रा को मिलाकर बनाया जाता है । ऐसा माना जाता है कि यह देवी का पसंदीदा पकवान है । धार्मिक कार्य प्रात:काल ही शुरू हो जाते हैं और दोपहर तक चढ़ावा तैयार कर दिया जाता है । पोंगाला के दौरान पुरुषों का मंदिर में प्रवेश वर्जित होता है । मुख्य पुजारी देवी की तलवार हाथों में लेकर मंदिर प्रांगण में घूमता है और भक्तों पर पवित्र जल और पुष्प वर्षा करता है।

शहर के निकटवर्ती दर्शनीय स्थल

अगस्त्यकूटम : ऐसा माना जाता है कि यह ऋषि अगस्त्य का निवास स्थान था । समुद्रतल से 1890 मीटर ऊपर स्थित यह जगह केरल का दूसरा सबसे ऊंचा स्थान है । सह्याद्री पर्वत शृंखला का हिस्सा अगस्त्यकूटम के जंगल अपने यहां मिलने वाली जड़ी बूटियों और वनस्पति के लिए जाने जाते हैं । यहां मिलने वाली चिकित्सीय औषधियों की संख्या 2000 से भी ज्यादा है । वनस्पतियों के अलावा इस जंगल में हाथी, शेर, तेंदुआ, जंगली सुअर, जंगली बिल्ली और धब्बेदार हिरन जैसे जानवर भी मिलते हैं । 1992 में 23 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को अगस्त्य वन बायोलॉजिकल पार्क बना दिया गया था । ऐसा करने के पीछे मुख्य उद्देश्य इस स्थान का शैक्षणिक प्रयोग करना था । ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए यह स्थान उपयुक्त है। इसके लिए दिसंबर से अप्रैल के बीच यहां आ सकते हैं ।

नेय्यार वन्यजीव अभयारण्य और नेय्यार बांध : तिरुवनंतपुरम से 30 किलोमीटर दूर स्थित यह जगह पश्चिमी घाट पर स्थित है । यहां की झील और बांध पर्यटकों को बहुत लुभाते हैं । अभयारण्य की स्थापना 1958 में की गई थी । इसका क्षेत्रफल 123 वर्ग किलोमीटर में फैला है। यह अभयारण्य नेय्यार, मुल्लयार

और कल्लार नदियों के प्रवाह क्षेत्र में आता है। वॉच टावर, क्रोकोडाइल फार्म, लायन सफारी पार्क और डियर पार्क यहां के मुख्य आकर्षण हैं। यहां से पहाड़ों का बहुत ही सुंदर नजारा दिखाई देता है। वन्य जीवों की बात करें तो गौर, भालू, जंगली बिल्ली और नीलगिरी लंगूर यहां पाए जाते हैं। यहां ट्रैकिंग और बोटिंग की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

पोनमुटि : पोनमुटि एक पतली सड़क के माध्यम से तिरुवनंतपुरम से जुडी है, जिसके दोनों तरफ मनोरम दृश्य देखने को मिलते हैं। यहां का मौसम साल भर सुहावना रहता है। तिरुवनंतपुरम के पर्वतारोहण तथा लंबी चढ़ाई वाली यात्रा के लिए एक अड्डे के रूप में इसका इस्तेमाल किया जाता है। इस क्षेत्र में चाय के बगान भी अवस्थित हैं। पोनमुटि के समीप के अन्य आकर्षणों में गोल्डन वैली और कई सारी छोटी और तीव्र प्रवाह वाली नदियां मिलती हैं, जिनमें से कुछ तो सड़कों के आर-पार बहती दिखाई पड़ती हैं। यहां के घनी हरियाली वाले वनों में उष्णकटिबंधीय वनस्पतियां पाई जाती हैं। ये पहाड़ियां कई प्रकार के वन्यजीवों का आश्रय स्थल हैं। पहाड़ियों तथा कल्लार नदी तक पहुंचने के रास्ते गोल्डन वैली से होकर गुजरते हैं।

01.04.2022 से 30.09.2022 तक की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों /कर्मचारियों की सूची

क्र.सं.	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तारीख
1.	मीरा एस	पर्यवेक्षक	30.04.2022
2.	हसन टी ए	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2022
3.	चंद्रन आर	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2022
4.	रमा एस	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2022
5.	अगस्टिन ए के	सहायक लेखा अधिकारी	30.04.2022
6.	शशिकला एस	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2022
7.	देवदास ए	वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2022
8.	श्रीवल्सन टी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2022
9.	रमणी के ए	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2022
10.	राजेंद्रन सी वी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
11.	प्रवीण पी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
12.	अजिता एम एम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2022
13.	मनोज बी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
14.	दिनेशन के	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
15.	अनिता पुत्तलत्त	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2022
16.	षाजु एन्टणि	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
17.	तोमस के प्रकाश	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2022
18.	राजेंद्रन के (सं.2)	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2022
19.	टोमी एन के	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2022
20.	श्रीकुमार एम	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
21.	शरत कुमार पी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2022
22.	स्नेहलता एम	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2022
23.	प्रेमकुमार ए	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2022
24.	गीता देवी बी एल	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
25.	उषाकुमारी बी	सहायक पर्यवेक्षक	31.05.2022
26.	उमावती ए	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
27.	वर्गीस चाको	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
28.	थोमस ए एल	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
29.	उदयकुमार एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2022

30.	लता एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2022
31.	स्नेहप्रभा के	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2022
32.	रमेशन कलयनकंडी	वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2022
33.	जयकुमार के के	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.05.2022
34.	मीना एम सेल्वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2022
35.	कृष्णदास ए के	सहायक लेखा अधिकारी	31.05.2022
36.	मुरुगन के (सं.2)	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2022
37.	बालचंद्रन एन एन	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2022
38.	षीला ओ	पर्यवेक्षक	30.06.2022
39.	लिस्सम्मा मुल्लनकुष़ी	वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2022
40.	कुमारी शालिनी के	निजी सचिव	30.06.2022
41.	श्रीकुमारन पी	वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2022
42.	पुष्पलता जे	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2022
43.	शंकरन नायर जी	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2022
44.	रमादेवी के	पर्यवेक्षक	30.06.2022
45.	शांति के पी	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2022
46.	सिसिली अगस्टिन	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2022
47.	सुजाता जी	पर्यवेक्षक	30.06.2022
48.	शशिधरन एस (सं.5)	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2022
49.	साजु पी पनक्कल	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2022
50.	शशिधरन एस (सं.4)	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.06.2022
51.	रमेश एन	सहायक पर्यवेक्षक	30.06.2022
52.	शोभा एस के	सहायक लेखा अधिकारी	30.06.2022
53.	प्रदीप कुमार के (सं.2)	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2022
54.	शशि कुमार पी.(सं.1)	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
55.	राणी एन एम	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
56.	जयकुमार एम आर	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2022
57.	सुरेश के पी	पर्यवेक्षक	31.07.2022
58.	मुरलीधरन नायर एन	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
59.	मनोज के पी (सं.2)	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2022
60.	अनिता कुमारी एम जी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
61.	अच्युतानंदन एम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.07.2022
62.	लैला पी वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
63.	राधाकृष्णन नायर ए	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2022

64.	जयश्री एम एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
65.	तंपी पी माणी	पर्यवेक्षक	31.07.2022
66.	मंजुला पी के	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
67.	थोमस एम वी	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2022
68.	प्रभाकरन वी पी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
69.	निर्मला देवी ए	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2022
70.	बेसिल ए ज़करिया	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2022
71.	जयंती एस	पर्यवेक्षक	31.07.2022
72.	गोपकुमार एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
73.	अब्दुल रसाक एम टी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
74.	राजन पी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
75.	श्रीलता एस	पर्यवेक्षक	31.07.2022
76.	कोच्चुपॉल पी एम	सहायक पर्यवेक्षक	31.07.2022
77.	मल्लिका के वी	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2022
78.	मोहनन ए पी	सहायक लेखा अधिकारी	31.07.2022
79.	उण्णिकृष्णन एम (सं.4)	वरिष्ठ लेखाकार	31.08.2022
80.	सोमन टी पी	वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2022
81.	तुलसी टी	बहुकार्य कर्मी	31.05.2022
82.	मोळी एलेक्स	लेखाकार	31.05.2022
83.	जयकुमार बी एस	बहुकार्य कर्मी	31.05.2022
84.	गीतम्मा बी	ग्रूप डी	31.05.2022

हिंदी पखवाड़ा समारोह-2022 के दौरान आयोजित
पोस्टर डिज़ाइनिंग प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए पोस्टर

विषय :आज़ादी का अमृत महोत्सव

विद्या मोहनलाल
वरिष्ठ लेखाकार

आन्ड्रिया लुइस
वरिष्ठ लेखाकार

श्रीजित के आर
वरिष्ठ लेखाकार

जिनु अब्रहाम
वरिष्ठ लेखाकार

तंकच्चन टी
वरिष्ठ लेखाकार

मिनी पवित्रन
सहायक पर्यवेक्षक

जयिन एस
लेखाकार

मिनी मैथ्यु
सहायक लेखा अधिकारी

राजी राजन
सहायक लेखा अधिकारी

चित्रकार

श्रीमती सतिधा, लेखाकार

प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695001